चम्पारण में बुनियादी शिक्षा की पुनर्कल्पना

अदिति ठाकुर और शंकर पूर्बे

आदर्श बुनियादी विद्यालयों की विशेषता है कि उनमें प्रशासन एवं प्रबंधन का सामुदायिकरण होता है, जिसमें स्थानीय स्तर पर शिक्षकों और अभिभावकों की सहभागिता में स्थानीय समुदाय उनकी मदद करते हैं और सरकार तथा सामाजिक संगठन उनके पूरक होते हैं। किसी उपयोगी शैक्षिक परिवर्तन (Educational Transformation) के लिए पहली शर्त सभी हितधारकों (Stakeholders) (जिनमें बच्चे भी शामिल हैं) में आपसी सहयोग की भावना का विकास होना है। मगर ऐसा देखा जाता है कि शैक्षणिक संस्थाओं में कुछ चुनिंदा लोगों के आधिपत्य से न सिर्फ कर्मठ लोगों की अनदेखी होती है बल्कि जीवन शैली में परिवर्तन लाने वाले समग्र शिक्षा का भी अनुपालन नहीं हो पाता है।

सही उन्मुखीकरण के साथ छात्रों एवं शिक्षकों को आकर्षित करने की दोहरी चुनौती ने शैक्षिक परिवर्तन के लिये बुनियादी शिक्षा की पुनर्कल्पना (Re-imagining Basic Education towards Learning Transformation) को जन्म दिया ताकि सर्वोदय की मंजिल को पाने के लिये बुनियादी विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझा जा सके।

विकास प्रबंधन संस्थान (डी.एम.आई.) पटना ने पश्चिम चम्पारण जिले के गौनाहा प्रखण्ड के भितिहरवा गाँव के एक बुनियादी विद्यालय का चयन किया जिसकी स्थापना स्वयं गाँधी जी ने 1917 में की थी। डी.एम.आई. ने छात्रों, शिक्षकों तथा स्थानीय समुदाय के सहयोग से बुनियादी शिक्षा में परिवर्तन की पुनर्कल्पना की है जिसमें गाँधी जी के आदर्शों के साथ-साथ समसामयिक जरूरतों, आकांक्षाओं और विचारों का भी समावेश हो। अपने इस प्रयास में डी.एम.आई. भितिहरवा बुनियादी विद्यालय (नामांकित छात्रों की संख्या 465) के परिपोषण तथा भितिहरवा संकुल के बारह अन्य विद्यालयों (नामांकित छात्रों की संख्या 3796) एवं एक कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय (नामांकित छात्राओं की संख्या 100) मे बुनियादी शिक्षा की पुनर्कल्पना परियोजना की शुरुआत की गई। इस पहल के पीछे सोच यह है कि इन विद्यालयों को आदर्श विद्यालय के रूप में परिपोषित किया जाए ताकि अन्य विद्यालय भी उन मानदंडों के अनुरूप परिवर्तित हो सकें। डी.एम.आई ने प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, सामाजिक संगठनों तथा शिक्षा संस्थानों से निरंतर महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त करने हेतु एक नेटवर्क तैयार किया है ताकि इस दिशा में होने वाले प्रयास को मूर्त रूप दिया जा सके।

बुनियादी शिक्षा में परिवर्तन की पुनर्कल्पना को साकार करने के लिये डी.एम.आई ने निम्नलिखित लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित किया -

- उन गतिविधियों की संकल्पना जो वर्तमान पाठ्यक्रम से सामंजस्य रखते हुए बुनियादी शिक्षा के गाँधी जी के दृष्टिकोण पर आधारित हों एवं समसामयिक ज़रूरतों, आकांक्षाओं तथा अवसरों के लिए भी उपयुक्त हों।

- विद्यालय के शिक्षकों में से ऐसे शैक्षिक सुगमकर्ताओं (Facilitators) का विकास, जो बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों का प्रभावी विकास कर सकें।
- सीखने के लक्ष्यों तथा मानकों को प्रभावी बनाने के लिये माता-पिता सहित स्थानीय समुदाय को प्रेरित करना।
- उस परिवर्तन की प्रतिकृति को कुछ अन्य बुनियादी विद्यालयों में लागू करना जिन्हें भितिहरवा के बुनियादी विद्यालय में शुरू किया गया है।
- इस प्रयास को आगे बढ़ाने के लिये शिक्षाविदों एवं शिक्षा प्रशासकों के एक फोरम का विकास।

प्रारंभ

परियोजना के सदस्यों ने शुरूआत में परिवेश को समझने का प्रयास किया। इस क्रम में संकुल के सभी स्कूलों का भ्रमण, शिक्षकों और अभिभावकों से संवाद तथा उन्हें परियोजना के उद्देश्य को समझाने में मदद करना, छात्रों की अभिरुचि एवं उनसे संवाद जैसे कार्य किए। परियोजना टीम ने संकुल के सभी 13 विद्यालयों के भ्रमण के क्रम में बच्चों की वर्तमान शैक्षणिक स्थिति, स्कूलों में छात्रों तथा अध्यापकों की औसत उपस्थिति, शिक्षकों के शैक्षणिक कौशल एवं विद्यालयों का बुनियादी ढाँचा; इन सभी का अध्ययन किया तथा परियोजना की रूपरेखा तैयार की। शिक्षकों से संवाद के क्रम में संसाधनों के परस्पर लेन-देन, आपसी सहयोग तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पर भी चर्चा हुई।

समुदाय के साथ संवाद

बेसलाईन सर्वे

एक व्यापक सर्वे किया गया जिसमें सभी 13 गाँवों के सभी घरों के 5 से 14 वर्षों तक के बच्चों के शैक्षणिक स्तर की जाँच की गई। मुख्य रूप से इस सर्वे का प्रयोजन साधारण गणितीय कौशल तथा अनुच्छेद पढ़ सकने की क्षमता का अध्ययन करना था। इस प्रयास में अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर की पहचान भी की गई तथा यह भी ज्ञात हुआ कि छात्रों में शिक्षा से पलायन की वजहें कौन-कौन सी हैं एवं अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति कितने जागरूक एवं गंभीर हैं।

महत्वपूर्ण अंतःक्षेप (Key interventions)

शुरुआती आंकलन के आधार पर डी.एम.आई ने अंतःक्षेप (interventions) के लिए एक आदर्श संकुल की परिकल्पना की जिसमें पाठयक्रम, विद्यार्थी, समुदाय, शिक्षक आपस में एक-दूसरे से जुड़े हों और परस्पर सहयोग प्रदान करते रहें।

गाँधी जी ने अपने नई तालीम में 'काम के क्रम में सीखने' (Learning by doing) के सिद्धांत को बुनियादी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना था। डी.एम.आई ने गाँधी जी के

इस सिद्धांत के आधार पर कुछ ऐसे व्यवसायिक कौशलों की पहचान की जिन्हें स्कूल के मौजूदा पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जा सके।

- कृषि और बागवानी।
- कृषि प्रसंस्करण आधारित कौशल।
- हस्तशिल्प और हस्तकरघा।
- टेराकोटा/मिट्टी आधारित शिल्प।
- बेसिक इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रॉनिक्स कार्य।
- पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता।
- जीवन कौशल।
- खेलकूद, संगीत, रंगमंच एवं नाटक।

यूनाइटेड नेशन्स कन्वेंशन फॉर राईट्स ऑफ चिल्ड्रेन (UNCRC) के अंतर्गत बच्चों को दिए गए मूलभूत अधिकारों को ध्यान में रखते हुये छात्रों के लिए अंतःक्षेप (interventions) की संरचना की गई है।

छात्र क्लबों का निर्माण व सशक्तिकरण

स्कूल की गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये विभिन्न प्रकार के समूहों का निर्माण कराया गया है जो छात्रों द्वारा संचालित होते हैं। ऐसे समूहों में स्वेच्छाग्रही समूह, खेलकूद समूह, सांस्कृतिक एवं संगीत समूह, विज्ञान समूह तथा कृषि एवं बागवानी समूह प्रमुख हैं। इसमें छात्रों की रुचि के अनुसार 20-20 छात्रों को विशेष कार्यकलापों के लिये प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। ये छात्र प्रशिक्षणोपरान्त अपने मित्रों को अपने ज्ञान एवं अनुभवों की जानकारी देते हैं। इस प्रकार छात्रों में परस्पर ज्ञान के आदान-प्रदान का सिलसिला प्रारंभ किया गया है।

शिल्प कला

संकुल के कुछ विद्यालयों के छात्रों में शिल्प कला की क्षमता की पहचान हुई है। इनमें प्राथमिक विद्यालय श्रीरामपुर के छात्रों ने चित्रकारी तथा मिट्टी की कलाकृतियों के निर्माण में काफी सराहनीय कार्य किया है। विजयपुर एवं पचकहर के प्राथमिक विद्यालय तथा सिठी के मध्य विद्यालय के छात्रों को स्थानीय हस्तशिल्प 'टोकरी बुनाई' की जानकारी है तथा अधिकतर विद्यार्थी इन कार्यों में निपुण हैं। इन हस्तशिल्पों के अतिरिक्त काठशिल्प तथा मृदाशिल्प के लिए प्रशिक्षकों की पहचान कर बच्चों को उन शिल्पों में भी उपयोगी प्रशिक्षण दिया गया।

विद्यार्थियों द्वारा कला एवं शिल्प कार्य

सह-शैक्षणिक एवं खेलकूद गतिविधियाँ

सह-शैक्षणिक गतिविधियों में छात्रों की रुचि एवं उसके माध्यम से पाठ्यक्रम को आसान तरीके से समझने में मदद को देखते हुए विद्यालयों में सह शैक्षणिक एवं खेलकूद गतिविधियों की शुरुआत की गई। इन गतिविधियों में विज्ञान प्रदर्शनी, गणित ओलिंपियाड, कबड्डी आयोजन प्रमुख हैं।

विद्यालयेतर गतिविधियों के लिए चाइल्ड सपोर्ट ग्रुप का निर्माण- प्रथम एजुकेशन फाउण्डेशन के सहयोग से 13 गाँवों में लगभग 1000 बच्चों के 194 समूहों का निर्माण किया गया है जिसे 74 वॉलण्टियर सहायता करते हैं। इन समूहों के निर्माण का उद्देश्य है कि बच्चों में स्कूल की पढ़ाई के अतिरिक्त समय में पढ़ने की लगन पैदा की जाए। इस प्रयोग में बच्चों को जीवन शैली एवं रोजमर्रा की सामान्य जानकारियों के अतिरिक्त विज्ञान, गणित, वाचन एवं प्रश्न निर्माण जैसे पाठ्यक्रम और अभ्यास दिए जाते हैं तथा बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे समूह के अन्य छात्रों को पढ़ने में मदद करेंगे। ये बच्चे शाम को अपने अभिभावकों, विशेषकर माताओं की देखरेख में सामूहिक पढ़ाई करते हैं। इन समूहों की निगरानी वॉलण्टियर्स के अलावा परियोजना के सदस्य नियमित रूप से करते हैं।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

इस पूरी परिकल्पना का मुख्य आधार शिक्षक है। वर्तमान में नियुक्त शिक्षकों में नई तालीम शिक्षा प्रणाली की समझ का अभाव है। पूर्व में उन्होंने नई तालीम पर कोई भी प्रशिक्षण प्राप्त नहीं की है। साथ ही सिस्टमिक रूप से

बाध्य होने के कारण शिक्षकों को कई बार अपने पढ़ने-पढ़ाने के तरीक़े को बदलना पड़ता है, ख़ासकर जब शैक्षणिक प्रशासकों का ज़ोर पाठ्यक्रम को खत्म करने पर हो। शिक्षकों के उन्मुखीकरण कार्यक्रम के तहत शैक्षणिक कौशल प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षकों को कई तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए कई प्रयत्न किए गए हैं। जैसे की एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को उन कौशलों से प्रयुक्त करना था जो उन्हें कक्षा 3 से 5 के छात्रों में अनुच्छेद वाचन तथा साधारण गणितीय संक्रियाओं में निपुण बना सके। इस अवसर पर गाँधीजी के नई तालीम पर आधारित एक छोटी फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। प्रशिक्षण में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि शिक्षक शारीरिक गतिविधियों का ज्यादा प्रयोग कर बच्चों को प्रयोगात्मक शिक्षा प्रदान करें। इस प्रशिक्षण को सिर्फ कक्षा प्रदर्शन तक सीमित नहीं रखा गया है अपितु इस प्रशिक्षण के अनुश्रवण की उचित व्यवस्था भी की गई है। अनुश्रवण के क्रम में प्रशिक्षित शिक्षकों के लिये समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित किया गया है, विद्यार्थियों के क्रमित विकास को निर्धारित करने का मासिक चार्ट बनाया गया तथा शिक्षकों को आवश्यकतानुसार समुचित सहायता उपलब्ध करवायी जाती है।

शिक्षकों के लिए नई तालीम पर आधारित शैक्षणिक कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें आनन्द निकेतन, वर्धा में शिक्षकों के समूह को शैक्षणिक कौशल की संवृद्धि के लिये भेजा गया। आनंद निकेतन एक ऐसा विद्यालय है जहाँ 2005 से गाँधी जी की नई तालीम पद्धति को महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा रहा है। साथ ही कई तरह के जीवन उपयोगी कौशल के द्वारा भी बच्चों को सशक्त बनाया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के पीछे एक उद्देश्य यह भी था की शिक्षक सामान्य तरह की पाठशाला से कुछ प्रेरणा लें और अपनी शिक्षण पद्धति को बेहतर बनाने का प्रयास करें।

विभिन्न कार्यक्रमों में शिक्षक एवं छात्रों की सहभागिता- शिक्षकों ने कई कार्यक्रमों में संरक्षक एवं मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन किया है। साथ ही, शिक्षकों को कम्प्यूटर, कृषि तथा अन्य तकनीकी प्रशिक्षण दिये जाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि वे स्वयं मार्गदर्शक बनकर छात्रों को समय-समय पर उचित सहायता कर सकें। ऐसा मानना है कि इस कोशिश से भविष्य में यह कदम छात्रों एवं शिक्षकों के बीच परस्पर सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है।

स्कूल मैनेजमेंट कमिटी की बैठकों का नियमित आयोजन

समुदाय और अभिभावकों के सक्रिय सहयोग से परियोजना के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। विद्यालयों को संचालित करने वाली समितियों की नियमित बैठकों को आयोजित करने के लिये परियोजना के सदस्यों ने समुदाय तथा शिक्षकों से विशेष आग्रह

किया तथा बैठकों के नियमित संचालन को सुनिश्चित किया है। बुनियादी विद्यालय भितिहरवा, उत्क्रमित उच्च विद्यालय भितिहरवा, मध्य विद्यालय कोहरगडी तथा प्राथमिक विद्यालय श्री रामपुर में इस प्रयास के सकारात्मक परिणाम आये हैं। इन विद्यालयों के कार्यकलापों में समुदाय एवं अभिभावकों की रुचि बढ़ी है। बुनियादी विद्यालय की समिति की बैठक विद्यालय के लिये फाटक बनाने के लिये बुलाई गई थी जिसमें समुदाय के सदस्यों ने सहयोग किया तथा अपने प्रयासों से फाटक का निर्माण कराया।

ग्रामीणों के बीच बच्चों की प्रगति का रिपोर्ट कार्ड प्रदर्शन

बेसलाईन सर्वे के आधार पर तैयार किये गये रिपोर्ट को जीविका दीदी, वार्ड मेंबर्स, वॉलण्टियर्स, आँगनबाड़ी कर्मियों तथा स्थानीय शिक्षकों के सहयोग से गाँवों के प्रमुख स्थलों पर प्रदर्शित किया गया। इन प्रदर्शनों में ग्रामीणों को बच्चों के शैक्षणिक स्तर की समस्याओं का जिक्र किया गया, उन्हें आश्वस्त किया गया कि इन कमियों को दूर करने का प्रयास सम्मिलित रूप से किये जाने की आवश्यकता है। अभिभावकों को बच्चों की प्रगति एवं शिक्षा की नियमित जाँच करने के लिये साधारण उपाय समझाये गए। उनसे अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने का आश्वासन लिया गया तथा यह सलाह भी दी गई कि वे शिक्षक-अभिभावक बैठकों को गंभीरता से लें तथा नियमित रूप से उनमें शामिल हों। आँगनबाड़ी सेविकाओं से विशेष आग्रह किया गया कि वे उन बच्चों की माताओं की विशेष मदद करें जिनके बच्चे विद्यालय जाने की उम्र तक पहुँच रहे हैं।

युवाओं, समुदाय के अन्य सदस्यों एवं माताओं के साथ विद्यालय को जोड़ने का प्रयास- अब तक 74 ऐसे युवा समुदाय के सामने आ चुके हैं जिन्होंने विद्यालय की सभी प्रकार की गतिविधियों में सहयोग करने की इच्छा दिखाई है। ऐसे ही कुछ सदस्य समय निकाल कर कम्प्यूटर सिखाने, छात्रों को हारमोनियम सिखाने आते हैं। ये युवा बच्चों को उनके घरों में भी पढ़ाई में मदद करते हैं। कुछ माताओं की पहचान भी की गई है जो शिल्प कार्यों में बच्चों की मदद करने को इच्छुक हैं। ऐसे लोगों को विद्यालयों में किये जाने वाले कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय परिवर्तन

इस परियोजना के दो वर्षों के अंतःक्षेप में कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियों को हासिल किया गया। इसके साथ ही कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। कुछ उल्लेखनीय परिवर्तन निम्नलिखित हैं:

- मध्याह्न भोजन के उपरान्त छात्रों के पलायन पर अंकुश - विद्यालयों में शिक्षण के अतिरिक्त इस परियोजना के द्वारा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के फलस्वरूप बच्चों की स्कूल के प्रति सोच बदली है तथा उत्सुकतावश उनमें विद्यालय की गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने की प्रवृत्ति बढ़ी है।
- बुनियादी विद्यालय के 5 छात्रों ने एकलव्य आवासीय विद्यालय के चयन प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

अब उन्हें भारत सरकार द्वारा समर्थित 'खेलो इंडिया' की समस्त सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। 16 जिलों से 498 छात्र कुल 9 रिक्त स्थान के लिए स्पर्धा में आये थे जिनमें एक ही विद्यालय के 5 छात्रों का चयन एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। खेलकूद के नियमित संचालन से छात्र देर शाम तक विद्यालय में ही रहने लगे हैं।

- कम्प्यूटर लैब का नियमित इस्तेमाल किया जा रहा है तथा काफी छात्र लाभान्वित हो रहे हैं।
- संकुल के अन्य विद्यालयों में क्विज एवं विज्ञान प्रदर्शनी के प्रति जिज्ञासा बढ़ी है तथा अन्य स्कूलों में भी इन गतिविधियों को शुरू किया जा रहा है।
- स्कूलों में शिक्षकों का आवागमन नियमित हुआ है।
- अभिभावकों, शिक्षकों एवं समुदाय के सदस्यों की नियमित बैठकों से विद्यालयों के प्रति उनका विश्वास बढ़ा है।

चुनौतियाँ

पिछले दो वर्षों में कई उपलब्धियों के वाबजूद भी गाँधीजी बुनियादी शिक्षा के मूलभूत सिद्धान्तों को पूर्णरूप से आत्मसात नहीं किया जा सका है। इनके पीछे के कुछ कारण शिक्षकों का अभाव, पढ़ाने के तरीक़े में बदलाव के प्रति अवरोध, शिक्षकों में नई तालीम पद्धति से पढ़ाने के लिए अपेक्षित कौशल का अभाव, विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्यों की कम भागीदारी, स्थानीय समुदाय के आकांक्षाओं में परिवर्तन एवं संस्थागत प्राथमिकताओं में बदलाव है।

उपसंहार

इस परियोजना का लक्ष्य बुनियादी विद्यालय की क्षमता को सुदृढ़ करना है ताकि ज्ञान के केन्द्र के रूप में यह विद्यालय पूर्णतः सक्षम हो सके, राज्य के अन्य विद्यालयों के लिये अनुकरणीय हो सके और अपनी ऐसी विशिष्ट पहचान बना सके जहाँ नई तालीम की मूल भावना न सिर्फ उपस्थित हो बल्कि पूर्णतः जागृत भी हो। वर्तमान में जब वैश्विक महामारी (COVID-19) में सारे शिक्षण संस्थानों को बंद करना पड़ा, और लोगों को अपने आस-पड़ोस तक ही सीमित रहना पड़ा, तब एक बार पुनः नई तालीम पद्धति के फायदों का अहसास हुआ। इस महामारी के दौर में जहाँ विद्यालयों में पढ़ाई रोकनी पड़ी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन सुविधाओं के अभाव के कारण पढ़ाई नहीं हो पा रही थी, भितिहरवा संकुल में स्थानीय समुदाय ने रोज़गारपरक शिक्षा जारी रखी। साथ ही समुदाय से कुछ युवा सदस्यों एवं माताओं ने स्थानीय स्तर पर पढ़ाई जारी रखी। ◆

अदिति ठाकुर : विकास प्रबंधन संस्थान, पटना में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। वह वर्तमान में बिहार के पश्चिम चंपारण के भितिहरवा गाँव (जहाँ से महात्मा गाँधी ने अपनी शैक्षिक और राजनीतिक गतिविधियों की शुरुआत की थी) में राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित 'री-इमैजिनिंग बेसिक एजुकेशन फॉर लर्निंग ट्रांसफॉर्मेशन' नामक परियोजना के समन्वयक के रूप में परियोजना का नेतृत्व कर रही हैं।

संपर्क : athakur@dmi.ac.in

शंकर पूर्बे : विकास प्रबंधन संस्थान में पिछले दो वर्षों से सह-आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। आई.आई.टी. धनबाद से पीएचडी की डिग्री प्राप्त करने के बाद दस वर्षों तक आई.आई.एम. शिलॉन्ग में बतौर सह-आचार्य के रूप में अपनी सेवा दी। इनकी शैक्षणिक कार्य रुचि विशेष रूप से स्कूली शिक्षा के प्रबंधन और संस्थानों के पुनरुत्थान से संबंधित कार्यों में है।

संपर्क : spurbey@dmi.ac.in